कक्षा 11 के लिए इतिहास की पाठ्यपुस्तक

11091

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण

जून 2006 ज्येष्ठ 1928

पुनर्मुद्रण

अप्रैल 2007 चैत्र 1929
दिसंबर 2007 अग्रहायण 1929
मई 2009 वैसाख 1931
जनवरी 2010 माघ 1931
जून 2011 ज्येष्ठ 1933
फरवरी 2013 माघ 1934
नवंबर 2013 कार्तिक 1935
जनवरी 2014 पौष 1935
दिसंबर 2014 पौष 1936
फरवरी 2016 माघ 1937
मार्च 2017 फाल्गुन 1938
फरवरी 2018 माघ 1939
जनवरी 2019 पौष 1940
दिसंबर 2019 अग्रहायण 1941

PD 70T RSP

₹ 180.00

एन.सी.ई.आर.टी. वॉटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा जनरल ऑफ़सेट प्रिंटिंग प्रेस, 42, इंडस्ट्रियल कॉलोनी, नैनी, इलाहाबाद - 211 010 (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

ISBN 81-7450-587-3

एन सी ई आर टी के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108ए 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III, इस्टेज
बेंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *अनुप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक : *बिबाष कुमार दास*
संपादक : *नरेश यादव*
उत्पादन सहायक : *प्रकाश वीर सिंह*

आवरण एवं सज्जा
आर्ट क्रिएशन्स, नयी दिल्ली

चित्रांकन
के. वर्गीज़

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और अपने अनुभव पर विचार करने का अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नये ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों व स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कैलेण्डर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् सामाजिक विज्ञान सलाहकार समूह के *अध्यक्ष*, प्रोफ़ेसर हरि वासुदेवन, इतिहास पाठ्यपुस्तक समिति के *मुख्य सलाहकार*, प्रोफ़ेसर नीलाद्रि भट्टाचार्य एवं *सलाहकार*, प्रोफ़ेसर नारायणी गुप्ता की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में कई शिक्षकों ने योगदान दिया;

इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री और सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
20 दिसंबर 2005

विश्व इतिहास का अध्ययन

आप सोच रहे होंगे कि एक ही वर्ष के अंदर विश्व इतिहास का अध्ययन कैसे संभव है? आखिर, विश्व के विभिन्न देशों में इतना कुछ हुआ और प्रत्येक देश के बारे में इतना कुछ लिखा जा चुका है। इतने विस्तृत व असीम संग्रह से कुछ विषयों को ही हम अध्ययन के लिए कैसे चुन सकते हैं?

ये जायज़ सवाल हैं। विश्व इतिहास पर किसी पुस्तक को पढ़ने से पहले हमें इन प्रश्नों का उत्तर जानना चाहिए। किसी भी पाठ्यक्रम से यह स्पष्ट होना चाहिए कि उसकी रचना किस प्रकार हुई है। इसी तरह से एक किताब से यह साफ़ होना चाहिए कि उसके क्या उद्देश्य हैं।

हमें यह याद रखना चाहिए कि इतिहास के अध्ययन अथवा लेखन में इतिहासकार सदैव तरह-तरह के चयन करता है। कई दशकों पहले ई.एच. कार ने इसी बात को अपनी उत्कृष्ट पुस्तक *इतिहास क्या है* में उठाया है। किसी पुराने अभिलेखागार में दस्तावेज़ों के ढेरों की जाँच-पड़ताल कर इतिहासकार उन तथ्यों को नोट करता है जो उसे महत्त्वपूर्ण जान पड़ते हैं। वह अन्य जगहों के अभिलेखागारों से प्रमाण एकत्रित करता है और विभिन्न प्रमाणों व तथ्यों में अंतर्संबंध स्थापित करने का प्रयास करता है। न तो वह उन सभी चीज़ों को उतार सकता है जिसे उसने पढ़ा है और न ही वह हर प्रमाण का प्रयोग कर सकता है। जो प्रमाण उसे महत्त्वपूर्ण नहीं लगते उन्हें वह छोड़ देता है। बाद में कोई अन्य इतिहासकार उन्हीं स्रोतों को नए प्रश्नों के साथ पढ़ता है। नए इतिहासकार को अब कुछ ऐसे प्रमाण मिलते हैं जिन्हें पहले अनदेखा कर दिया गया था। वे इन प्रमाणों की व्याख्या करती हैं, नए अंतर्संबंध कायम करती है और इस तरह से इतिहास की एक नयी किताब लिख डालती हैं।

चयन की यह प्रक्रिया इतिहास लेखन में अंतर्निहित रही है। इसलिए इतिहास पढ़ते समय यह देखना आवश्यक है कि इतिहासकार कैसी घटनाओं के बारे में लिख रहा है तथा कैसे उनकी व्याख्या कर रहा है। हमें इतिहासकार के प्रमुख तर्क और उसकी सोच के ढाँचे को जानना जरूरी है जिसके जरिए वे किन्हीं विशेष घटनाओं को समझता है।

हाल तक हम जो इतिहास पढ़ते आए हैं आमतौर पर वह आधुनिक पश्चिम के उदय की कहानी रही है। यह कहानी निरंतर प्रगति और विकास की थी: विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, बाज़ार व व्यापार, तर्क तथा तर्कणावाद, आज़ादी और स्वतंत्रता के विस्तार की। अक्सर किन्हीं विशेष घटनाओं का इतिहास पश्चिम की विजयी यात्रा की बड़ी कहानी का ही हिस्सा था। समस्त विश्व में साम्राज्यवादी प्रभुत्व अतीत की इसी अवधारणा पर आधारित था। पश्चिम अपने को इस प्रगति का अग्रदूत मानता था। वह यह मानता था कि विश्व को सभ्य बनाना, सुधार करना व करवाना, विभिन्न देशों के मूल निवासियों को शिक्षित करना, व्यापार व बाज़ारों का विस्तार करना उसकी ख़ास ज़िम्मेवारी है।

क्या आज हमें इस समझ के बारे में प्रश्न नहीं उठाने चाहिए? ऐसा करने के लिए हमें विश्व इतिहास को फिर से देखना होगा। कई महाद्वीपों और लम्बे ऐतिहासिक कालों का सफर करते हुए हमें यह सोचना होगा कि विश्व इतिहास को नए तरीके से देखा जा सकता है। इस यात्रा में *विश्व इतिहास के कुछ विषय* आपकी मदद करेगी।

ऐसा यह तीन तरीकों से करेगी।

सबसे पहले यह पुस्तक विकास और प्रगति की महान कहानियों के पीछे छुपे ज़्यादा 'अँधेरे' इतिहासों से आपका परिचय कराएगी। आप देखेंगे कि कैसे पंद्रहवीं, सोलहवीं शताब्दियों में दक्षिण अमरीका में अन्वेषकों और व्यापारियों के आगमन ने केवल पश्चिमी वाणिज्य और संस्कृति के लिए अपने द्वार ही नहीं खोले बल्कि इससे वहाँ विभिन्न तरह की बीमारियाँ फैलीं, सभ्यता का विनाश हुआ और आबादियों का खात्मा हो गया (विषय 8)। बाद में उत्तरी अमरीका व ऑस्ट्रेलिया में गोरों के बसने का परिणाम केवल प्रगति नहीं (विषय 10) रहा। इन स्थानों में आधुनिक पूँजीवादी विकास के इतिहास के पीछे मूल निवासियों के विस्थापन व जन-संहार की भयानक कहानियाँ हैं।

फिर जब आप अनुभाग दो में राज्यों व साम्राज्यों के निर्माण के बारे में पढ़ेंगे तो पाएँगे कि वह कहानी केवल रोम (विषय 3) यानि कि यूरोप की नहीं है बल्कि मध्य इस्लामिक राज्यों (विषय 4) एवं मंगोलों के क्षेत्रों की (विषय 5) भी है। इन अध्यायों से आपको पता चलेगा कि इन जगहों पर समाज व राजनीतिक व्यवस्था अलग ढंग से संगठित थी।

यह पुस्तक अनुभाग चार में आधुनिकीकरण के विभिन्न रास्तों के बारे में भी आपको बताएगी। आप जानते होंगे कि औद्योगीकरण सबसे पहले ब्रिटेन में हुआ। एक ज़माने में यह माना जाता था कि अन्य देशों ने विभिन्न तरीकों से ब्रिटिश मॉडल का ही अनुकरण किया। इसलिए अन्य देशों में औद्योगीकरण से जुड़े विकास को ब्रिटिश मॉडल के हिसाब से ही परखा जाता रहा। ऐसा तर्क फिर से पश्चिम को विश्व केंद्र के रूप में देखता है। लेकिन आज हम यह जानते हैं कि सारी रचनात्मकता पश्चिम से ही नहीं आई। दूसरी ओर यह कहना भी उचित नहीं होगा कि विश्व घटनाओं पर पश्चिम का कोई प्रभाव नहीं पड़ा, या फिर प्रत्येक देश के इतिहास को अलग-थलग कर देखना चाहिए, या फिर हमें विकास की देशज जड़ों का ही परीक्षण करना चाहिए। ऐसा परिप्रेक्ष्य सीमित होगा और यह एक तरह की संकीर्णता पैदा करेगा। इसकी जगह हमें यह जानना आवश्यक है कि विभिन्न देशों में लोग अपनी दुनिया बनाने के लिए रचनात्मक तरीकों से काम करते रहे हैं और इन क्रियाकलापों का प्रभाव अन्य देशों और यूरोप सहित अन्य महाद्वीपों पर पड़ा है। विषय सात में आप देखेंगे कि पुनर्जागरण युगीन यूरोप की सांस्कृतिक गतिविधियों पर दुनिया के अन्य देशों में होने वाली घटनाओं का भी बहुत प्रभाव पड़ा।

इस पुस्तक में आपकी यात्रा आरंभिक मानव समाज (विषय 1) तथा आरंभिक नगरों (विषय 2) के विकास से शुरू होगी। आप फिर देखेंगे कि दुनिया के तीन अलग हिस्सों में कैसे बड़े राज्य-साम्राज्य विकसित हुए और इनको कैसे संगठित किया गया (अनुभाग दो)। अगले अनुभाग में आप देखेंगे कि कैसे नौवीं व पंद्रहवीं शताब्दियों के बीच यूरोपीय समाज व संस्कृति में बदलाव आया और, दक्षिणी अमरीका के लोगों के लिए यूरोपीय विस्तार का क्या अर्थ (अनुभाग तीन) था। अंततः आप आधुनिक विश्व के जटिल निर्माण का इतिहास पढ़ेंगे (अनुभाग चार)। आपको ये सभी अध्याय इन विषयों के विवादों से परिचित करवाएँगे ताकि आप समझ सकें कि इतिहासकार पुराने मुद्दों पर कैसे निरंतर पुनर्विचार करते रहते हैं।

प्रत्येक अनुभाग एक परिचय व कालरेखा से शुरू होता है। परीक्षा के लिए इन तिथिक्रमों को याद रखना ज़रूरी नहीं है। इनके द्वारा यह बताया गया है कि एक खास समय पर दुनिया के विभिन्न हिस्सों में क्या हो रहा था। इनसे आपको विभिन्न जगहों के सापेक्षिक इतिहास को जानने में मदद मिलेगी।

कालरेखाएँ बनाना एक कठिन काम है। किसी भी कालरेखा में हम किन तिथियों को शामिल करते हैं? इस पर हमेशा इतिहासकार एकमत नहीं रहे हैं। वास्तव में अगर आप एक ही काल से संबंधित विभिन्न पुस्तकों में दिए गए तिथिक्रमों की तुलना करें तो आप शायद पाएँगे कि उन सभी के मुख्य मुद्दे भिन्न हैं। इसलिए हमें प्रत्येक तिथिक्रम को आलोचनात्मक ढंग से पढ़ना चाहिए। हमें यह देखना चाहिए कि कोई भी तिथिक्रम हमें क्या बताता है और क्या नहीं बताता है। कालरेखाएँ विशिष्ट रूप से इतिहास की रूपरेखा निर्धारित कर देती हैं।

इस वर्ष आप दक्षिण एशिया के इतिहास के बारे में नहीं पढ़ रहे हैं। अगले वर्ष की पुस्तक भारतीय इतिहास से जुड़े विषयों पर होगी। इन वर्षों (कक्षा 11 व 12) में आप विश्व इतिहास की निर्णायक घटनाओं और प्रक्रियाओं के बारे में ही नहीं बल्कि ये भी जानेंगे कि इतिहासकार अतीत के बारे में अपनी समझ कैसे बनाते हैं? आप देखेंगे कि वे किन स्रोतों का प्रयोग करते हैं और उन्हें कैसे समझते हैं। आप यह भी जानेंगे कि ऐतिहासिक ज्ञान विवादों व पुनर्व्याख्याओं के द्वारा कैसे बनता है।

नीलाद्रि भट्टाचार्य
मुख्य सलाहकार, इतिहास

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति

हरि वासुदेवन, *प्रोफ़ेसर,* इतिहास विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता

मुख्य सलाहकार

नीलाद्रि भट्टाचार्य, *प्रोफ़ेसर,* ऐतिहासिक अध्ययन केंद्र, समाज विज्ञान संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

सलाहकार

नारायणी गुप्ता (*अवकाशप्राप्त प्रोफ़ेसर*), इतिहास विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, नयी दिल्ली (विषय 10)

सदस्य

अरूप बनर्जी, *प्रोफ़ेसर,* इतिहास विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली (विषय 9)
अनिल सेठी, *प्रोफ़ेसर,* सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
चित्रा श्रीनिवासन, *वरिष्ठ अध्यापिका,* सरदार पटेल विद्यालय, नयी दिल्ली
जयरस वाणाजी, *विजिटिंग प्रोफ़ेसर,* जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली (विषय 3)
नजफ़ हैदर, *एसोसिएट प्रोफ़ेसर,* ऐतिहासिक अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली (विषय 4)
बीबा सोब्ती, *वरिष्ठ अध्यापिका,* मॉडर्न स्कूल, नयी दिल्ली
ब्रिज तंखा, *प्रोफ़ेसर,* पूर्व एशियाई अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली (विषय 11)
भास्कर चक्रवर्ती, *प्रोफ़ेसर,* इतिहास विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता (विषय 7)
रजत दत्त, *प्रोफ़ेसर,* ऐतिहासिक अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली (विषय 6)
रीतू सिंह, *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर,* सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
लक्ष्मी सुब्रमण्यम, *प्रोफ़ेसर,* पूर्व एशियाई अध्ययन केंद्र, कोलकाता (विषय 8)
सुनील कुमार, *एसोसिएट प्रोफ़ेसर,* इतिहास विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली (विषय 5)
सुप्रिया वर्मा, *एसोसिएट प्रोफ़ेसर,* इतिहास विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद (विषय 1)
शीरीन रत्नागर (*अवकाशप्राप्त प्रोफ़ेसर*), इतिहास अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली (विषय 2)

हिंदी अनुवाद

अनिल सेठी, *प्रोफ़ेसर,* सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
परशुराम शर्मा, *भूतपूर्व निदेशक* (राजभाषा), भारत सरकार
प्रत्यूष कुमार मंडल, *एसोसिएट प्रोफ़ेसर,* सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
राजेन्द्र प्रसाद तिवारी (*अवकाशप्राप्त अनुसंधान अधिकारी*), इतिहास एवं पुरातत्त्व, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, नयी दिल्ली
रीतू सिंह, *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर,* सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
संजीव कुमार, हिंदी विभाग, देशबंधु कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
सीमा एस. ओझा, *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर,* सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

सदस्य-समन्वयक

प्रत्यूष कुमार मंडल, *प्रोफ़ेसर,* सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

आभार

इस पुस्तक के निर्माण में अनेक लोगों ने उसके अध्यायों को पढ़कर, चित्र एवं लेखन सामग्री प्रदान कर, उसकी बनावट और सज्जा की कल्पना करने में और उसके अनुवाद और कॉपी संपादन में सहयोग दिया है।

कुमकुम रॉय ने इस पुस्तक के बनने की प्रक्रिया में अनेक रूपों में मदद की है। निहारिका गुप्ता ने महत्वपूर्ण योगदान दिया और साहित्यिक संदर्भ बताए। पुस्तक के विशिष्ट अध्यायों पर अपनी टिप्पणियों के लिए हम एलन माएने, डॉन ओ कॉनर, जया मेनन, पार्थो दत्ता, पीटर मेयर और फिलिप ओलडनबर्ग के आभारी हैं। हम प्रीति गुप्ता दीवान, बजरंग बिहारी तिवारी, शिखा सेठी, संजय शर्मा, अरुणा बेरी, योगेन्द्र दत्त और उमेश के भी आभारी हैं जिन्होंने हिंदी पाण्डुलिपि के पुनरावलोकन में सहयोग दिया। कुसुम बाँठिया को हम विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहते हैं जिन्होंने अनुवाद से जुड़ी अनेक नाजुक समस्याओं को पल में हल किया।

इस पुस्तक के मानचित्रों के निर्माण में सहायता करने के लिए हम देविका सेठी के आभारी हैं।

इस पुस्तक के निर्माण में अखिला यैचुरी, अनीष विनायक, दीपाश्री बॉल, निहारिका गुप्ता, पल्लवी राघवन व पार्थ शील के योगदान के लिए हम उन्हें विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहते हैं।

पाठ्यपुस्तक के वर्तमान संस्करण में 'कोरिया की कहानी' शीर्षक से एक खंड जोड़ा गया है। इसके मूल लेख एवं चित्रों के लिए हम सेंटर फ़ॉर इंटरनेशनल अफ़ेयर्स, दि एकेडमी ऑफ़ कोरियन स्टडीज़, सिओल, रिपब्लिक ऑफ़ कोरिया के ली वार बोम, प्रोफ़ेसर ऑफ़ पॉलीटिक्स, और चो यंग जुन, प्रोफ़ेसर ऑफ़ इकोनॉमिक्स के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। इसके अतिरिक्त, इस खण्ड का हिंदी में अनुवाद करने के लिए हम डॉ. नीरजा समाजदार, एसोसिएट प्रोफ़ेसर, सेंटर फ़ॉर कोरियन स्टडीज़, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली के भी आभारी हैं।

परिषद् की ओर से *डी.टी.पी. ऑपरेटर* अरविंद शर्मा, विजय कुमार तथा *कॉपी एडिटर* विजय कुमार शर्मा, विभूति नाथ झा तथा *प्रूफ रीडर* सीमा यादव ने अपना पूर्ण योगदान दिया। इतने कम समय में काम पूरा कर देने और पूरी परियोजना में इतनी दिलचस्पी लेने के लिए हम इन सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

चित्रों के लिए आभार

विलियम ए. टर्नबॉग, रॉबर्ट जरमेन, लिन किलगोर, हैरी नेलसन, *अंडरस्टैंडिंग फिज़िकल ऐंथ्रोपोलॉजी एंड आर्किओलॉजी*, वैड्स्वर्थ/थॉमसन लर्निंग, बेलमॉन्ट, 2002 (पृष्ठ 1,9,11,19 और 28 के चित्रों के लिए)

जे. बोर्डमैन, जे. ग्रिफिन, ओ. मर्रे, *ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ दि क्लासिकल वर्ल्ड,* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1991 (पृष्ठ 61, 63, 66 और 69 के चित्रों के लिए)

बारबारा ब्रेंड, *इस्लामिक आर्ट,* ब्रिटिश म्यूजियम प्रेस, 1991 (पृष्ठ 80 और 96 के चित्रों के लिए)

बर्नार्ड लेविस, *इस्लाम*, टेम्स एंड हडसन, 1992 (पृष्ठ 79, 91, 92 और 97 के चित्रों के लिए)

एम. हट्सटाइन और पी. डेलियस (संपादित), *इस्लामः आर्ट एंड ऑर्किटेक्चर,* कोनमैन, 2000 (पृष्ठ 90, 95, 100, 101, 121 के चित्रों के लिए)

पी. गे एवं टाइम-लाइफ पुस्तकों के संपादक, *एज ऑफ एनलाइटेनमेंट,* एम्स्टरडैम, 1985 (पृष्ठ 186 व 187 के चित्रों के लिए)

पी.बी. एब्री, *दि केम्ब्रिज इलस्ट्रेटेड हिस्ट्री ऑफ चाइना,* केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1996 (पृष्ठ 244 के चित्रों के लिए)

जोनाथन डी. स्पेंस, *दि सर्च फॉर मॉडर्न चाइना,* सेंचुरी हचिन्सन, 1990 (पृष्ठ 247, 250 और 252 के चित्रों के लिए)

जे. कोलटन व टाइम-लाइफ पुस्तकों के संपादक, *ट्बेन्टीएथ सेंचुरी*, एम्स्टरडैम, 1985 (पृष्ठ 186 व 187 के चित्रों के लिए)

लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस, प्रिंट्स एवं फोटोग्राफ्स प्रभाग, वॉशिंगटन डी.सी. (पृष्ठ 224, 139 के चित्रों के लिए)

नेशनल जिओग्राफिक, दिसंबर 1996, फरवरी 1997 (पृष्ठ 108, 110, 113, 116, 121 के चित्रों के लिए)

विषय सूची